हफ़्तावार रिसाला : 388
Weekly Booklet : 388

Tafseere Noorul Irfan Se 72 Madni Phool (Qisht - 2) (Hindi)

"तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान"

से 72 मदनी फूल (क़िस्त : 2)

सफ़हात : 20

दिल की सख़्ती की नुहूसत 04
सब से पहले मोमिन 08
विलायत के 4 दरजे 13
नबी से अ़दावत का नुक़्सान 18

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दावते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला **"तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान" से 72 मदनी फूल** (क़िस्त : 2)"

मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

"तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान" से 72 मदनी फूल (क़िस्त : 2)

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 19 सफ़्हात का रिसाला : **"तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान से 72 मदनी फूल** (क़िस्त : 2)" पढ़ या सुन ले उस का दिल क़ुरआन के नूर से मुनव्वर फ़रमा और उस को मां बाप और ख़ानदान समेत बे ह़िसाब जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िला नसीब फ़रमा।

اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सलाम का जवाब देते हैं

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "مَامِنْ اَحَدٍ يُسَلِّمُ عَلَيَّ اِلَّا رَدَّ اللّٰهُ عَلَيَّ رُوْحِيْ حَتّٰى اَرُدَّ عَلَيْهِ السَّلَامَ" या'नी जब भी कोई शख़्स मुझ पर सलाम भेजता है तो **अल्लाह** पाक मेरी रूह़ लौटा देता है ह़त्ता कि मैं उस का जवाब देता हूं। (ابوداؤد، 2/315، حدیث:2041)

ह़दीसे पाक की शर्ह़

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : यहां रूह़ से मुराद तवज्जोह है न वोह जान जिस से ज़िन्दगी क़ाइम है। हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) तो ब ह़याते दाइमी (या'नी हमेशा की ज़िन्दगी के साथ) ज़िन्दा हैं। इस ह़दीस का येह मत़लब नहीं कि मैं वैसे तो बेजान रहता हूं किसी के दुरूद पढ़ने पर ज़िन्दा हो कर जवाब देता रहता हूं वरना हर आन हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) पर लाखों दुरूद पढ़े जाते हैं तो लाज़िम आएगा कि

हर आन लाखों बार आप की रूह निकलती और दाख़िल होती रहे।

(मिरआतुल मनाजीह, 2/101)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मदीने से गुजरात जाने का हुक्म

मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه सात मरतबा ह़रमैने शरीफ़ैन की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुए। एक मरतबा ह़ज के बा'द लम्बे अ़र्से तक मदीनए मुनव्वरह की पुरकैफ़ और नूरबार फ़ज़ाओं में अपनी ज़िन्दगी के ह़सीन अय्याम गुज़ारे, दिल में येह ख़्वाहिश मचल्ने लगी कि काश ! कोई ऐसी सूरत निकल आए कि हमेशा के लिये इसी पाक सर ज़मीन पर रहना नसीब हो जाए। मस्जिदे नबवी शरीफ़ के क़रीब रहने वाले एक साह़िब को ख़्वाब में हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत नसीब हुई और येह हुक्म मिला : "अह़मद यार ख़ान से कहो कि वोह गुजरात जाएं और तफ़्सीर का काम करें।" आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तक जब येह पैग़ाम पहुंचाया गया तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बेह़द ख़ुश हुए और फ़रमाने लगे : बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से येह हुक्म मिला है कि गुजरात जाओ ! तो अब गुजरात ही मेरे लिये मदीना है। (ह़यातु सालिक, स. 127 मुलख़्ख़सन)

मदीने का कुछ काम करना है सय्यिद

मदीने से मैं इस लिये जा रहा हूं

आ़शिक़े सादिक़ मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

ह़कीमुल उम्मत, सच्चे आ़शिक़े रसूल, आ़लिमे बा अ़मल, सूफ़िये बा सफ़ा, मुफ़स्सिरे क़ुरआन ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुबारक नाम से कौन सा आ़शिक़े रसूल मुतआ़रिफ़ नहीं ? **अल्लाह** पाक

ने दुन्या भर में मुफ़्ती साहिब को और आप की किताबों और तफ़्सीरों को मक़्बूलिय्यत अ़ता फ़रमाई है और मक़्बूलिय्यत क्यूं न हो ! कि तफ़्सीर लिखने का हुक्म तो आप को बारगाहे रिसालत से हुवा। मुफ़्ती साहिब की मश्हूर दो तफ़ासीर हैं : ﴾1﴿ तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान ﴾2﴿ तफ़्सीरे नईमी (येह मुकम्मल तफ़्सीर मुफ़्ती साहिब की नहीं है, 11 पारों की तफ़्सीर लिखने के बा'द आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल हो गया।)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने वक़्त के बहुत बड़े आ़लिमे दीन और मुह़द्दिस थे। आप की तह़रीरात व तस्नीफ़ात पढ़ें तो ऐसा लगता है गोया हर हर सत़र (या'नी लाइन) से इ़श्क़े रसूल के चश्मे फूट रहे हों। तफ़्सीरे क़ुरआन हो या ह़दीस की शर्ह़, मुफ़्ती साहिब शाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बयान करने का कोई मौक़अ़ जाने नहीं देते। अ़क़्ली दलाइल से मुतअस्सिर होने वालों को अ़क़्ली और आ़म मुसल्मानों को नक़्ली (या'नी क़ुरआनो ह़दीस से) मिसाल देते हैं कि अगर बन्दे ने तन्क़ीद की ऐ़नक न पहनी हो तो अश अश कर उठे। येह रिसाला आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मश्हूर तफ़्सीर "नूरुल इरफ़ान" के ह़सीन निकात पर मुश्तमिल है। **अल्लाह** पाक मुफ़्ती साहिब के मज़ार पर रह़मतो अन्वार की बरसात फ़रमाए और हमें इन के फ़ैज़ान से मालामाल फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

"सूरतुल अन्आ़म" से ह़ासिल होने वाली 22 ख़ूब सूरत बातें

﴾1﴿ आस्मान भी सात हैं और ज़मीनें भी सात, लेकिन आस्मान एक दूसरे से फ़ासिले पर हैं और ज़मीन के त़बक़े आपस में चिमटे हुए हैं जैसे पियाज़ के छिल्के। नीज़ हर आस्मान की ह़क़ीक़त मुख़्तलिफ़ है कोई तांबे का, कोई

चांदी का, कोई सोने का मगर हर ज़मीन की ह़क़ीक़त सिर्फ़ मिट्टी है। इस लिये क़ुरआने करीम में हर जगह आस्मान को जम्अ़ और ज़मीन को वाह़िद फ़रमाया जाता है। लिहाज़ा क़ुरआनी आयात में तआ़रुज़ (या'नी टक्राव) नहीं। ख़याल रहे कि आस्मानों की पैदाइश दो दिन में, ज़मीन की पैदाइश दो दिन में और ह़ैवानात, दरख़्त वग़ैरा की पैदाइश दो दिन में हुई, दिन से मुराद इतना वक़्त है वरना उस वक़्त दिन न था, दिन तो सूरज से होता है और उस वक़्त सूरज न था। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 154, 267 मुल्तक़त़न)

﴾2﴿ काफ़िर पर उस के बुरे आ'माल सुवार होंगे और मोमिन अपने बा'ज़ नेक आ'माल पर सुवार होगा, क़ुरबानी सुवारी बनेगी। काफ़िर की नेकियां हलकी और गुनाह भारी होंगे। मोमिन की नेकी वज़्नी और गुनाह हलके होंगे। मे'दा ख़राब हो तो खाना बोझ हो कर हम पर सुवार होता है। मे'दा अच्छा हो तो खाना हलका हो कर ख़ुद सुवारी बन जाता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 158)

दिल की सख़्ती की नुहूसत

﴾3﴿ तमाम अ़ज़ाबों में सख़्त तर अ़ज़ाब दिल की सख़्ती है, जिस से ता'लीमे नबी असर न करे। इस से मा'लूम हुवा कि गुनाह व मआ़सी के बा वुजूद दुन्यावी राह़तें मिलना **अल्लाह** का ग़ज़ब और अ़ज़ाब है कि इस से इन्सान और ज़ियादा ग़ाफ़िल हो कर गुनाह पर दिलेर हो जाता है बल्कि कभी ख़याल करता है कि गुनाह अच्छी चीज़ है वरना मुझे येह ने'मतें न मिलतीं, येह "कुफ़्र" है। येह भी मा'लूम हुवा कि नेक बन्दे पर तकालीफ़ आना रह़मते इलाही का ज़रीआ़ है कि इस से इस सालेह़ (या'नी नेक बन्दे) के दरजात बुलन्द होते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 160)

मोमिन और काफ़िर की मौत के 3 नाम

﴾4﴿ मोमिन की मौत के तीन नाम हैं : (1) वफ़ात (या'नी अपना काम पूरा कर देने का वक़्त) आगे आराम व इन्आ़म का वक़्त (2) विसाल या'नी यार से मिलने का ज़रीआ़ (3) शहादत या'नी रब की बारगाह में ह़ाज़िरी का ज़रीआ़। काफ़िर की मौत के भी तीन नाम हैं : (1) तदमीर (या'नी तबाही) دَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا (2) हलाकत اَهْلَكْنٰهُمْ और (3) अख़्ज़ اَخَذْنٰهُمْ। यूंही मोमिन की ज़िन्दगी का नाम ह़याते त़य्यिबा (या'नी पाकीज़ा ज़िन्दगी) है, काफ़िर की ज़िन्दगी का नाम مَعِيْشَةً ضَنْكًا (तंग ज़िन्दगानी) है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 160)

﴾5﴿ सालिह़ीन को ख़ुश ख़बरी है कि वोह हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के दरवाज़े से दुरकारे (या'नी निकाले) न जाएंगे, न दुन्या में न आख़िरत में, लिहाज़ा जो हुज़ूर (صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से क़ुर्ब चाहे वोह रब की याद किया करे। येह हुक्म ता क़ियामत (क़ियामत तक के लिये) जारी है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 161)

﴾6﴿ हर अदना आ'ला चीज़ लौह़े मह़फ़ूज़ में लिखी है और येह लिखना इस लिये नहीं कि रब तआ़ला को अपने भूल जाने का अन्देशा था लिहाज़ा लिख लिया बल्कि अपने ख़ास मुक़र्रब बन्दों को बताने के लिये है जिन की नज़र लौह़े मह़फ़ूज़ पर है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 162)

﴾7﴿ पैग़म्बर के दिल में मख़्लूक़ की ऐसी हैबत नहीं आती जो उन्हें अदाए फ़राइज़ से रोक दे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 166)

﴾8﴿ दुन्या का क़ियाम और हमारा यहां रहना आ़रिज़ी (Temporary) है, अस्ली मक़ाम आख़िरत है। इस लिये दुन्या को दारुल फ़िरार (या'नी भाग जाने की जगह) और आख़िरत को दारुल क़रार (मुस्तक़िल ठहरने की जगह) कहते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 169)

﴾9﴿ सूफ़ियाए किराम (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم) फ़रमाते हैं : जिस त़रह़ दाना बिग़ैर पानी की मदद के उग नहीं सकता ऐसे ही हमारे आ'माल बिग़ैर किसी की नज़रे इनायत के बारगाहे इलाही में क़बूल नहीं हो सकते। शैत़ान के पास आ'माल का तुख़्म (दाना) काफ़ी था मगर उसे नुबुव्वत का पानी न मिला लिहाज़ा क़ुबूलिय्यत का फल न लगा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 169)

﴾10﴿ वाइज़ व आ़लिम इस त़रीक़े से वा'ज़ न करे जिस से लोगों में ज़िद पैदा हो जाए और फ़साद व मारपीट तक नौबत पहुंचे। अगर किसी के मुतअ़ल्लिक़ येह क़वी अन्देशा (पूरा ख़याल) हो कि उसे नसीह़त करना और ज़ियादा ख़राबी का बाइस होगा तो (नसीह़त) न करे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 758)

﴾11﴿ तब्लीग़ और मो'जिज़ात वग़ैरा मुस्तक़िल हादी (राहनुमा) नहीं। हिदायत रब के करम से मिलती है। येह चीज़ें हिदायत का सबब (हैं), मरज़ के दफ़्इ़या (या'नी दूर करने) के लिये दवाएं कि दवा ज़रूर करनी चाहिये मगर भरोसा रब पर चाहिये। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 171)

﴾12﴿ जिन्नो इन्स के सिवा तमाम मख़्लूक़े इलाही हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की मुत़ीओ़ फ़रमां बरदार, रब की इबादत गुज़ार है, कोई काफ़िर नहीं और कोई नबी का दुश्मन नहीं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 171)

﴾13﴿ बिग़ैर इल्म दीनी मसाइल में झगड़ना या महज़ झगड़े की निय्यत से मुनाज़रा करना शैत़ान या शैत़ानी लोगों का काम है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 172)

﴾14﴿ गुनाहगार मोमिन अपने गुनाह को अच्छा नहीं समझता लिहाज़ा मोमिन रहता है लेकिन काफ़िर अपनी बद किरदारियों को अच्छा जानता है, इस पर नाज़ करता है इस लिये वोह लाइक़े मग़्फ़िरत नहीं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 759)

सीने के तंग होने की अ़लामत

﴾15﴿ दीनी काम भारी मा'लूम होना, दुन्यावी काम आसान मह़सूस होना, तंगिये सीना की अ़लामत है और तंगिये सीना येह है कि अस्बाबे कुफ़्र जम्अ़ हो जाएं और इस्लाम के अस्बाब न मुहय्या हो सकें। **अल्लाह** बचाए। ख़याल रहे कि इस से येह लाज़िम नहीं आता कि बन्दा कुफ़्र करने पर मजबूर है बल्कि वोह जो कुफ़्रो तुग़्यान (सरकशी) करता है वोह अपने इख़्तियार से करता है। उस की बद किरदारियों से दिल में येह ह़ाल पैदा होता है। जैसे लोहा ज़ंग लग कर बेकार हो जाता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 173)

﴾16﴿ जन्नत में हर क़िस्म की सलामती होगी। मरज़, मौत किसी की मुख़ालफ़त का ख़त़रा न होगा इस लिये इसे “दारुस्सलाम” (या'नी सलामती का घर) कहते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 759)

﴾17﴿ अगर अच्छे ह़ाकिम चाहते हो तो अच्छे आ'माल करो।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 174)

﴾18﴿ क़ियामत में ह़िसाब किताब, सुवाल जवाब रब तआ़ला की बे इ़ल्मी की वज्ह से नहीं बल्कि इस लिये है कि जैसे दुन्या में बे ख़बरों पर अ़ज़ाब नहीं ऐसे ही आख़िरत में भी बल्कि मुजरिमों को बता कर क़ाइल कर के अ़ज़ाब दिया जाएगा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 174)

﴾19﴿ ज़ाहिर में नेक रहना, छुप कर गुनाह करना, तक़्वा नहीं बल्कि रियाकारी है। तक़्वा येह है कि हर ह़ाल में रब से ख़ौफ़ करे। रियाकार खुले फ़ासिक़ से ज़ियादा ख़त़रनाक है। मुह़ावरा :

तन उज्ला मन सांवला बगले सा भेक तो से तो कागा भला जो अन्दर बाहर एक[1]

1... येह मुह़ावरा है, तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान में इसे बत़ौरे शे'र लिखा है, अल्फ़ाज़ में कुछ तब्दीली है, लुग़त वग़ैरा से देख कर इसे दुरुस्त किया गया है।

(या'नी रियाकार, बगले की त़रह़ है कि वोह दिखने में तो साफ़ सुथरा और सफ़ेद नज़र आता है मगर हर वक़्त शिकार के लिये तय्यार रहता है। रियाकार बन्दे से तो कव्वा अच्छा है कि वोह जैसा काला होता है वैसा ही नज़र आता है।) रब तआ़ला सह़ीह़ तक़्वा नसीब फ़रमाए, आमीन।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 178, 760)

﴾20﴿ सूफ़ियाए किराम (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم) फ़रमाते हैं कि मुआ़मलात की ख़राबी इबादात की ख़राबी तक पहुंचा देती है और इबादात की ख़राबी कभी अ़क़ाइद की ख़राबी का ज़रीआ़ बन जाती है। तर्के मुस्तह़ब तर्के सुन्नत का और तर्के सुन्नत तर्के फ़र्ज़ का ज़रीआ़ है, चोर को पहले दरवाज़े पर ही रोको। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 179)

﴾21﴿ **अल्लाह** के लिये ज़िन्दगी वोह है जो रब के कामों के लिये वक़्फ़ हो। जिये तो दीन की ख़िदमत और रब की याद में, मरे तो रब की इत़ाअ़त करता हुवा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 760)

﴾22﴿ सारी मख़्लूक़ में सब से पहले मोमिन हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) हैं। ह़ज़रते जिब्रील व मीकाईल (عَلَيْهِمَا السَّلَام) से पहले भी आप आ़बिद बल्कि नबी थे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 760)

"सूरतुल आ'राफ़" से ह़ासिल होने वाली 21 ख़ूब सूरत बातें

﴾1﴿ रात का आख़िरी ह़िस्सा ज़ाकिरों (या'नी **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करने वालों) के लिये नुज़ूले रह़मत का वक़्त है, ग़ाफ़िलों के लिये नुज़ूले अ़ज़ाब का। इसी लिये इस वक़्त तहज्जुद की नमाज़ बेहतर है कि ग़ज़बे इलाही की आग ठन्डी हो जाए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 181)

इश्क़े इलाही और महब्बते रसूल

﴾2﴿ इश्क़े इलाही और महब्बते मुस्तफ़ा का वज़्न न होगा कि येह अ़मल नहीं क़ल्बी कैफ़िय्यत है। ऐसे ही हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के आ'माल का वज़्न न होगा क्यूं कि कोई तराज़ू हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के आ'माल तोल नहीं सकती। जैसे दुन्या की तराज़ू समुन्दर का पानी और हवाएं नहीं तोल सकती। हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के नाम में इतना वज़्न होगा कि मुझ जैसे लाखों गुनाहगारों के गुनाहों के दफ़्तर (आ'माल नामे) اِنْ شَآءَ الله उस के मुक़ाबिल हलके हो जाएंगे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 182)

﴾3﴿ सब से पहला तकि़य्या शैत़ान ने किया (या'नी झूट बोला) कि दिल में आदम عَلَيْهِ السَّلَام से दुश्मनी रख कर ज़बान से दोस्ती ज़ाहिर की।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 183)

﴾4﴿ ख़त़ा की अपनी त़रफ़ निस्बत करनी चाहिये और नेक काम की रब की त़रफ़। येह सुन्नते नबवी है। शैत़ान ने अपनी गुमराही की रब की त़रफ़ निस्बत की, कि बोला "فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِيْ तू ने मुझे गुमराह कर दिया।" वोह मरदूद हुवा। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 761)

﴾5﴿ शैत़ान ब ज़ाहिर कुफ़्फ़ार का दोस्त है और कुफ़्फ़ार दिल से शैत़ान के दोस्त हैं वरना शैत़ान दर ह़क़ीक़त कुफ़्फ़ार का भी दोस्त नहीं वोह तो हर इन्सान का दुश्मन है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 184)

इत्तिफ़ाक़ में बरकत है

﴾6﴿ दोज़ख़ के अ़ज़ाबों से एक अ़ज़ाब वहां आपस की ना इत्तिफ़ाक़ी भी है जैसे जन्नत के सवाबों में से एक सवाब वहां का इत्तिफ़ाक़ो महब्बत है।

दुन्या में जिस मोमिन के घर में सुल्ह़ है वोह जन्नती घर है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 186)

﴾7﴿ जाहिलों की बद तमीज़ी पर तह़म्मुल (या'नी बरदाश्त) करना सुन्नते अम्बिया (عَلَيْهِمُ السَّلَام) है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 191)

﴾8﴿ दुन्या में मुसीबत व आराम इम्तिह़ान हैं, मुसीबत में साबिर (सब्र करने वाला), आराम में शाकिर (शुक्र करने वाला) रहना चाहिये।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 196)

﴾9﴿ मुसीबत में रब की त़रफ़ रुजूअ़ न करना, इस को इत्तिफ़ाक़ियात में से मानना ग़ाफ़िल क़ौम की अ़लामत है। स़हाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) हर बीमारी में सोचते थे कि किस ग़लती की वज्ह से येह तक्लीफ़ आई और हर ने'मत पर ख़ौफ़ करते थे कि कहीं येह ने'मत रब का अ़ज़ाब न हो। बेदार दिल की येही अ़लामत होती है। **अल्लाह** नसीब करे।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 196)

﴾10﴿ अ़ज़ाबे इलाही अक्सर ग़फ़्लत के वक़्त आता है और ग़फ़्लत ज़ियादा तर रात के आख़िरी ह़िस्से में या दोपहर के वक़्त होती है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 196)

﴾11﴿ मोमिने कामिल की पहचान येह है कि कुफ़्फ़ार उस से नाख़ुश हों, कुफ़्फ़ार की नाख़ुशी कुव्वते ईमानी की दलील है। जिस से काफ़िर भी ख़ुश हों और मुसल्मान भी वोह मुनाफ़िक़ है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 199)

﴾12﴿ ग़ुरूर वोह आग है जो दिल की तमाम क़ाबिलिय्यतों को जला कर बरबाद कर देती है, ख़ुसूसन जब कि **अल्लाह** के मक़्बूलों के मुक़ाबिल तकब्बुर हो। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 202)

﴾13﴿ **अल्लाह** पाक ने उम्मते मुहम्मदिय्यह के नेक आ'माल तो पिछली उम्मतों को बताए मगर इन की बद अ़मलियां ज़ाहिर न फ़रमाईं क्यूं कि येह उम्मत अगर्चे गुनाहगार है मगर महबूब की उम्मत है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 764)

﴾14﴿ हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की ता'ज़ीम क़ौलन अ़मलन हर त़रह़ लाज़िम है बल्कि रुक्ने ईमान है और जो ता'ज़ीम ह़राम न हो, वोह की जाए, सुबूत की ज़रूरत नहीं, सज्दा न करो, बाक़ी हर त़रह़ की ता'ज़ीम करो।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 205)

﴾15﴿ हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की इत्तिबाअ़ के मा'ना हैं : बे सोचे समझे इन की इत़ाअ़त करना, अपने आप को इन के हाथ में ऐसे दे देना जैसे मुर्दा ग़ुस्ल देने वाले के हाथ में। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 205)

﴾16﴿ गुनाहों की नुहूसत से **अल्लाह** की ने'मतें छिन जाती हैं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 765)

﴾17﴿ मुक़द्दस शह्र में रहना सहना भी **अल्लाह** की एक ने'मत है। मदीने वाले ख़ुश नसीब हैं कि दियारे महबूब में रहते हैं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 765)

﴾18﴿ जो ज़बान ह़म्दे इलाही व ना'ते पैग़म्बर न बोले, वोह गूंगी है। जो कान **अल्लाह** का कलाम न सुनें, वोह बहरे हैं। जो आंख उस की दलीलें न देखे वोह अन्धी है क्यूं कि अपने मक़्सूदे पैदाइश को अदा नहीं करती।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 209)

﴾19﴿ जिन्नो इन्स में हिदायत पर कम हैं और गुमराह ज़ियादा।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 209)

﴾20﴿ इन्सान अगर ठीक रहे तो फ़रिश्तों से बढ़ जाए और अगर उलटा चले तो जानवरों से भी बदतर हो जाए कि जानवर तो अपने बुरे भले को जानता है, येह नहीं जानता। कुत्ता सूंघ कर मुंह डालता है मगर येह इन्सान बिग़ैर तह़क़ीक़ ही ह़राम ह़लाल सब खा जाता है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 209)

﴾21﴿ जैसे नमाज़ व रोज़ा वग़ैरा इबादात अदा करने चाहिएं ऐसे ही आ़लम (या'नी दुन्या) की चीज़ों में ग़ौरो फ़िक्र भी करना चाहिये कि इस से मा'रिफ़ते इलाही (या'नी **अल्लाह** पाक की पहचान) नसीब होती है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 209)

"सूरतुल अन्फ़ाल" से ह़ासिल होने वाली 6 ख़ूब सूरत बातें

﴾1﴿ क़ुरआन ख़ुज़ूओ़ ख़ुशूअ़ (या'नी आ़जिज़ी व इन्किसार) और हुज़ूरे क़ल्बी (या'नी ख़ूब तवज्जोह) से पढ़ना चाहिये। मोमिन का इस जहान में रब से डरना आइन्दा बे ख़ौफ़ी का ज़रीआ़ है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 213)

﴾2﴿ **अल्लाह** के फ़ज़्ल से मोमिन के दिल में बातिल का ख़ौफ़ नहीं आता बल्कि बातिल को मोमिन की हैबत होती है। ईमान मोमिन का बड़ा हथियार है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 767)

﴾3﴿ **अल्लाह** पाक मोमिन को ऐसी फ़िरासत बख़्शता है कि वोह मुख़्लिस और मुनाफ़िक़ को पहचान लेता है, फिर कैसे हो सकता है कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) को मुनाफ़िक़ीन की पहचान न हो! ऐसे ही मोमिन नूरे ईमान से ह़क़्क़ो बातिल में फ़र्क़ कर लेता है। मोमिन का दिल क़ुदरती तौ़र पर बातिल से नफ़रत करता है और ह़क़ पर राग़िब होता है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 217)

रियाकारी और इख़्लास का बयान

﴾4﴿ तक़्वा के चार दरजे हैं, इस लिये विलायत के भी चार दरजे हुए : (1) कुफ़्र से बचना, (2) गुनाहों से बचना, (3) मश्कूक चीज़ों और शुबुहात से बचना, (4) ग़ैरुल्लाह से बचना। ग़ैरुल्लाह वोह जो रब से ग़ाफ़िल करे। अगर नमाज़ व दीगर इबादात रिया (लोगों को दिखाने) के लिये हों तो वोह ग़ैरुल्लाह हैं और अगर खाना रब के लिये हो तो वोह ग़ैर नहीं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 768)

﴾5﴿ तालियां सीटियां बजाना कुफ़्फ़ार का त़रीक़ा है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 218)

﴾6﴿ **अल्लाह** सुनता तो सब की है मगर मानता सब की नहीं, मानता उन की है जो रब की मानते हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 768)

"सूरतुत्तौबह" से ह़ासिल होने वाली 23 ख़ूब सूरत बातें

﴾1﴿ मस्जिद की आबादी का शौक़ ईमान की अ़लामत है। इसी त़रह़ मस्जिदों से नफ़रत या मस्जिदें बरबाद करने का जज़्बा कुफ़्र की अ़लामत है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 228)

मस्जिद में लाइटिंग करने का रवाज बहुत पुराना है

﴾2﴿ तरावीह़ में ख़त्मे रमज़ान के वक़्त मस्जिद में चराग़ां करना बहुत कारे सवाब (या'नी सवाब का काम) है कि येह भी आबादिये मस्जिद (या'नी मस्जिद आबाद करने) में दाख़िल है। मस्जिदे नबवी में सब से पहले आ'ला फ़र्श ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने डाले, इस से पहले सिर्फ़ बजरी थी। इस की आ़लीशान इमारत सब से पहले ह़ज़रत उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने बनाई। इस में सब से पहले किन्दीलें तमीम दारी (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) ने रोशन कीं। अ़ह्दे

फ़ारूक़ी में रमज़ान की तरावीह के मौक़अ पर आप ने चराग़ां किया और ह़ज़रते अ़ली (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) ने उ़मरे फ़ारूक़ (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) को नूरे क़ब्र की दुआ दी (कि **अल्लाह** पाक आप की क़ब्र को रोशन करे)। (सह़ाबिये रसूल) ह़ज़रते दिह़्या कल्बी (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) मस्जिदे नबवी में चराग़ां करते थे। ह़ज़रते सुलैमान (عَلَیْہِ السَّلَام) बैतुल मुक़द्दस में ऐसे रोशनी फ़रमाते थे कि कोसों (मीलों दूर) तक उस की रोशनी में औ़रतें चरख़ा कात लेती थीं। ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام ने बैतुल मुक़द्दस में किब्रीते अह़मर (लाल गन्धक) की रोशनी की जिस की रोशनी बारह मुरब्बअ़ मील होती थी और उसे चांदी सोने से आरास्ता फ़रमाया। येह सब ह़ज़रात **अल्लाह** पाक के प्यारे थे।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 228)

﴾3﴿ ह़ुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के काम रब के काम हैं क्यूं कि मुसल्मानों को ख़ुशी सुनाना ह़ुज़ूर (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) का काम है इसी लिये आप का नाम "बशीर" (या'नी ख़ुश ख़बरी सुनाने वाला) है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 770)

﴾4﴿ क़ियामत में बख़्शिश और जन्नत की ने'मतें सिर्फ़ अपने अ़मल का नतीजा नहीं बल्कि **अल्लाह** तआ़ला के फ़ज़्ल का नतीजा हैं, नेक आ'माल तो उस का फ़ज़्ल ह़ासिल करने का ज़रीआ़ हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 770)

﴾5﴿ **अल्लाह** की रिज़ा तमाम ने'मतों से आ'ला ने'मत है। **अल्लाह** नसीब करे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 770)

शाने सिद्दीक़ी

﴾6﴿ (ह़ज़रते) अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) की सह़ाबिय्यत क़त्ई ईमाने क़ुरआनी है लिहाज़ा इस का इन्कार कुफ़्र है। सिद्दीक़े अक्बर (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ)

का दरजा हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के बा'द (सह़ाबए किराम में) सब से बड़ा है कि इन्हें रब ने हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का सानी फ़रमाया। इस लिये हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) ने इन्हें अपने मुसल्ले पर इमाम बनाया । हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के बा'द ख़िलाफ़त सिद्दीक़े अक्बर के लिये है। रब तआ़ला इन्हें दूसरा बना चुका फिर इन्हें तीसरा या चौथा करने वाला कौन है ? वोह तो क़ब्र में भी दूसरे हैं, ह़श्र में भी दूसरे होंगे। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 771)

﴾7﴿ मुनाफ़िक़ नेकी भी बुरी निय्यत से करता है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 234)

आख़िरत का मुआ़मला दुन्या के मुआ़मले के बर अ़क्स

﴾8﴿ राहे ख़ुदा में तक्लीफ़ से बच जाना नुक़्सान है और तक्लीफ़ बरदाश्त करना फ़ाएदा है, जो राहे ह़क़ में ज़ियादा ख़र्च करे वोह नफ़्अ़ में है और जो कम ख़र्च करे वोह नुक़्सान में है। वहां का मुआ़मला यहां के बर अ़क्स है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 771)

नमाज़ में सुस्ती से मुराद

﴾9﴿ सुस्ती से नमाज़ पढ़ना मुनाफ़िक़ों का त़रीक़ा है। इस से बहुत से मसाइले फ़िक़्हिय्या (शर्ई़ मसाइल) निकाले जा सकते हैं। तंग वक़्त में नमाज़ पढ़ना, बिग़ैर जमाअ़त नमाज़ पढ़ने का आ़दी हो जाना, नंगे सर नमाज़ पढ़ना, खुले बटन या आस्तीन चढ़ाए हुए नमाज़ पढ़ना मक्रूह है कि येह काहिली की अ़लामात हैं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 235)

﴾10﴿ जो माल, औलाद, रब से ग़ाफ़िल करे वोह रब का अ़ज़ाब है। **अल्लाह** इस से बचाए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 235)

मोमिन और काफ़िर की मौत

﴾11﴿ मालदार की जान बड़ी मुसीबत से निकलती है और इसे दुगनी (या'नी डबल) तक्लीफ़ होती है, दुन्या से जाने और माल छोड़ने की। मोमिन की जान आसानी से निकलती है कि वोह इसे हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) से मिलने का ज़रीआ़ समझता है। इस लिये उस की मौत के दिन को "उ़र्स" कहा जाता है या'नी शादी और दूल्हा से मुलाक़ात का दिन। मौत एक रेल (या'नी ट्रेन) है जो मुजरिम को फांसी की जगह और दूल्हे को बरात की जगह पहुंचाती है। मोमिन के लिये मौत "मिलने का दिन" है, काफ़िर के लिये "छूटने का दिन।" (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 235)

जन्नत की ने'मतें और रब की रिज़ा

﴾12﴿ जन्नत की ने'मतों में सब से बड़ी ने'मत येह होगी कि **अल्लाह** जन्नतियों से राज़ी होगा, कभी उन पर नाराज़ न होगा। महबूब की रिज़ा आ़शिक़ के लिये बड़ी ने'मत है। ख़याल रहे कि **अल्लाह** की रिज़ा और **अल्लाह** का दीदार किसी अ़मल का बदला न होगा। येह ख़ास अ़ति़य्याए रब होगा। दुन्या में **अल्लाह** पाक के राज़ी होने की अ़लामत येह है कि उस से **अल्लाह** के नेक बन्दे राज़ी हों और उसे नेक आ'माल की तौफ़ीक़ मिले। जब रब किसी से राज़ी होता है तो फ़रिश्तों में ए'लान होता है कि हम इस से राज़ी हैं तुम भी इस से राज़ी हो जाओ और तमाम ज़मीन वालों के दिलों में उस की महब्बत पड़ जाती है। बुज़ुर्गाने दीन (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم) की त़रफ़ दिलों का माइल होना उन के महबूबे इलाही होने की अ़लामत है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 239)

﴾13﴿ **अल्लाह** की थोड़ी रिज़ामन्दी बड़ी काम्याबी है। **अल्लाह** अपने करम से नसीब फ़रमाए। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 239)

﴾14﴿ जिस को गुनाह आसान मा'लूम हों नेक काम भारी, समझो उस के दिल में निफ़ाक़ (या'नी मुनाफ़क़त) है। रब तआ़ला महफ़ूज़ रखे।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 772)

क़ब्र में मुतबर्रक चीज़ें रखना जाइज़ है

﴾15﴿ मुर्दे के कफ़न में या क़ब्र में मुतबर्रक (या'नी बरकत वाली) चीज़ें रखना ताकि क़ब्र का अ़ज़ाब दफ़्अ़ (या'नी दूर) हो, जाइज़ बल्कि सुन्नत है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 241)

﴾16﴿ सदक़ा लेने वाला देने वाले को दुआ़ए ख़ैर दे।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 244)

﴾17﴿ कोई मुसल्मान सह़ाबा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) के दरजे को नहीं पहुंच सकता। उन की नेकियों की रसीद अ़र्शे आ'ज़म से आ चुकी, हमारी किसी नेकी की क़बूलिय्यत की ख़बर नहीं। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 244)

﴾18﴿ हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के आस्ताने पर ह़ाज़िरी दे कर तौबा करना ज़ियादा क़बूलिय्यत का बाइ़स है। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 245)

पसन्दीदा सदक़ा

﴾19﴿ जो सदक़ा हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के हाथ से ख़ैरात कराया जाए वोह बहुत मह़बूब (या'नी पसन्दीदा) है। सह़ाबा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) का इस पर अ़मल था। (तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 245)

﴾20﴿ ख़ताकार बन्दे के लिये बॉयकॉट बेहतरीन इस्लाह़ है।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 775)

﴾21﴿ सूफ़ियाए किराम (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم) फ़रमाते हैं कि जिस के दिल में नबी से अ़दावत (या'नी दुश्मनी) हो उसे तौबा की तौफ़ीक़ बहुत कम मिलती है, अक्सर उस का ख़ातिमा कुफ़्र पर होता है। रब तआ़ला महफ़ूज़ रखे।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 249)

फ़ैज़ाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾22﴿ हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की विलादत मक्के में और रिहाइश मदीने में मगर तशरीफ़ आवरी हर मुसल्मान के सीने में है, जैसे सूरज रहता चौथे आस्मान पर है मगर चमक्ता सारे जहान पर है जैसे सूरज का आ़म फ़ैज़ या'नी रोशनी तो हर जगह है मगर ख़ास फ़ुयूज़ ख़ास जगह चुनान्चे वोह खेतों में दाना पकाता है, चमन में फूल खिलाता है, बाग़ों में फल पकाता है, बदख़्शां[2] के पहाड़ों में ला'लो याक़ूत बनाता है, ऐसे ही हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) का आ़म फ़ैज़ (या'नी तब्लीग़) हर एक को पहुंचा मगर ईमान सिर्फ़ मोमिनों को मिला। इरफ़ाने आ़म औलियाउल्लाह को, क़ुत़्बियत और ग़ौसिय्यत का जाम ख़ास औलिया को, सह़ाबिय्यत मख़्सूस जमाअ़त को। हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की वफ़ात से हुज़ूर (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की विलादत या'नी ज़ुहूर ख़त्म हुवा, तशरीफ़ आवरी ख़त्म न हुई। आप हमेशा के लिये आ गए जैसे सूरज के ग़ुरूब से उस का ज़ुहूर ख़त्म होता है न कि वुजूद।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 775)

﴾23﴿ और लोग तो अपनी और अपनी औलाद की ख़ैर के ह़रीस होते हैं मगर येह रसूले रह़मत अपनी उम्मत की ख़ैर पर ह़रीस हैं।

(तफ़्सीरे नूरुल इरफ़ान, स. 775)

2... अफ़्ग़ानिस्तान की एक रियासत जिस के ला'ल मश्हूर हैं।

फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़ह़ा नम्बर
जवाबे सलामे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	1
ह़दीसे पाक की शर्ह़	1
मदीने से गुजरात जाने का हुक्म	2
आ़शिक़े सादिक़ मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी	2
"सूरतुल अन्आ़म" से ह़ासिल होने वाली 22 ख़ूब सूरत बातें	3
दिल की सख़्ती की नुहूसत	4
मोमिन और काफ़िर की मौत के 3 नाम	5
सीने के तंग होने की अ़लामत	7
"सूरतुल आ'राफ़" से ह़ासिल होने वाली 21 ख़ूब सूरत बातें	8
इ़श्क़े इलाही और मह़ब्बते रसूल	9
इत्तिफ़ाक़ में बरकत है	9
"सूरतुल अन्फ़ाल" से ह़ासिल होने वाली 6 ख़ूब सूरत बातें	12
रियाकारी और इख़्लास का बयान	13
"सूरतुत्तौबह" से ह़ासिल होने वाली 23 ख़ूब सूरत बातें	13
मस्जिद में लाइटिंग करने का रवाज बहुत पुराना है	13
शाने सिद्दीक़ी	13
आख़िरत का मुआ़मला दुन्या के मुआ़मले के बर अ़क्स	15
नमाज़ में सुस्ती से मुराद	15
मोमिन और काफ़िर की मौत	16
जन्नत की ने'मतें और रब की रिज़ा	16
क़ब्र में मुतबर्रक चीज़ें रखना जाइ़ज़ है	17
पसन्दीदा सदक़ा	17
फ़ैज़ाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم	18

अगले हफ़्ते का रिसाला

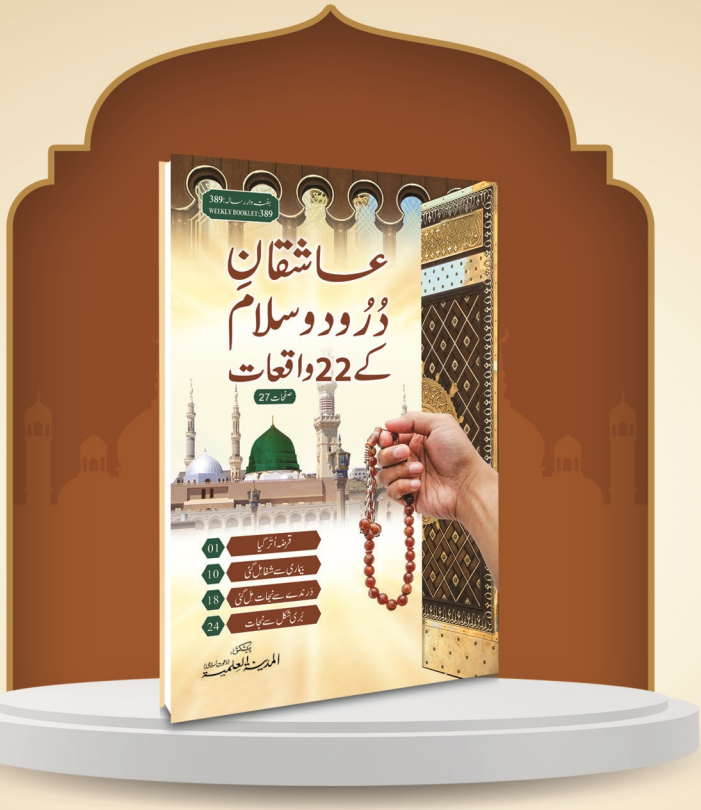

DAWATE ISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

مکتبۃ المدینہ
MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025